RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
दिसंबर
04
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index

By Ankit Avasthi Sir

दक्षिण कोरिया में मार्शल लॉ का ऐलान / Martial law declared in South Korea

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक योल ने इमरजेंसी मार्शल लॉ का ऐलान किया। राष्ट्रपति ने विपक्ष पर आरोप लगाया कि वह संसद को नियंत्रित कर रहा है, उत्तर कोरिया के साथ सहानुभूति रखता है, और सरकार को गिराने वाली गतिविधियों में शामिल है।

- 1980 के बाद यह पहली बार है, जब दक्षिण कोरिया में मार्शल लॉ घोषित किया गया है।

मार्शल लॉ क्यों लागू किया गया?

1. **विपक्ष पर आरोप**: राष्ट्रपति यून सुक योल ने विपक्ष पर संसद को नियंत्रित करने, उत्तर कोरिया के साथ सहानुभूति रखने, और सरकार गिराने की गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाया।
2. **राजनीतिक तनाव**: सरकार और विपक्ष के बीच बजट विधेयक को लेकर विवाद चल रहा था, जिससे देश में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ी।
3. **प्रदर्शन और विरोध**: राजधानी सियोल में सड़क से लेकर संसद तक बड़े प्रदर्शन हो रहे थे। प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़पें हुईं।
4. **सुरक्षा स्थिति**: संसद पर हेलिकॉप्टर तैनात कर दिए गए और कई विपक्षी सांसदों को हिरासत में लिया गया।

मार्शल लॉ (Martial Law): मार्शल लॉ एक अस्थायी व्यवस्था है जिसमें किसी क्षेत्र की प्रशासनिक और कानूनी जिम्मेदारी नागरिक अधिकारियों से लेकर सैन्य अधिकारियों को सौंप दी जाती है। इसे आपातकालीन स्थिति में लागू किया जाता है जब नागरिक प्रशासन अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में अक्षम हो।

मुख्य बिंदु:

1. **आवश्यकता और उद्देश्य:**
   - मार्शल लॉ का उद्देश्य कानून-व्यवस्था बनाए रखना और आपातकालीन स्थितियों (जैसे दंगे, विद्रोह या युद्ध) में स्थिरता प्रदान करना है।
   - यह नागरिक कानूनों को स्थगित कर देता है और नागरिकों पर सैन्य कानून लागू करता है।
2. **प्रभाव:**
   - आमतौर पर नागरिक अधिकारों (जैसे बोलने की आजादी और स्वतंत्रता) पर रोक लगाई जाती है।
   - सैन्य अधिकारी आपराधिक न्याय प्रक्रिया और अन्य प्रशासनिक कार्यों का संचालन करते हैं।
   - यह अक्सर विवादास्पद होता है क्योंकि इसका उपयोग दमनकारी सरकारों द्वारा अधिकारों को कुचलने के लिए भी किया जा सकता है।

रोक या प्रतिबंध:

1. नागरिक अधिकारों पर रोक:
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (Freedom of Speech) पर प्रतिबंध।
- प्रेस और मीडिया सेंसरशिप लागू की जाती है।
- सार्वजनिक सभाओं और प्रदर्शनों पर प्रतिबंध।

2. कानूनी प्रक्रियाएं निलंबित:
- नागरिक अदालतों को निलंबित कर दिया जाता है।
- सैन्य अदालतें (Military Tribunals) स्थापित होती हैं।
- गिरफ्तारी और हिरासत के लिए वारंट की आवश्यकता समाप्त हो सकती है।

3. आम जीवन पर नियंत्रण:
- कर्फ्यू लागू किया जा सकता है।
- सार्वजनिक स्थानों पर जाने पर रोक लगाई जा सकती है।
- यात्रा और यातायात पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है।

4. संपत्ति और संसाधनों पर नियंत्रण:
- निजी संपत्ति और व्यवसायों को जब्त किया जा सकता है।
- नागरिक संसाधनों का सैन्य उपयोग के लिए अधिग्रहण।

5. राजनीतिक गतिविधियों पर रोक:
- राजनीतिक दलों और संगठनों की गतिविधियों पर प्रतिबंध।
- चुनाव स्थगित किए जा सकते हैं।

लागू करने का अधिकार:
- **राष्ट्रपति या सरकार**: अधिकांश देशों में मार्शल लॉ लागू करने का अधिकार राष्ट्रपति या शीर्ष कार्यकारी के पास होता है।
- **सैन्य प्रमुख**: कुछ स्थितियों में, सैन्य प्रमुख असाधारण परिस्थितियों में मार्शल लॉ लागू कर सकते हैं।

समाप्त करने का अधिकार:
- **सत्ता में सरकार**: जब स्थिति सामान्य हो जाती है, तो सरकार मार्शल लॉ समाप्त करती है।
- **अदालती हस्तक्षेप**: यदि अदालतें मानती हैं कि मार्शल लॉ अनावश्यक रूप से लागू किया गया है, तो इसे समाप्त करने का आदेश दे सकती हैं।

प्रगति प्लेटफ़ॉर्म / PRAGATI Platform

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की हालिया रिपोर्ट "From Gridlock to Growth: How Leadership Enables India's PRAGATI Ecosystem to Power Progress" भारत के प्रगति (PRAGATI) प्लेटफॉर्म को डिजिटल शासन के माध्यम से विकास को गति देने का एक उत्कृष्ट उदाहरण मानती है।

- रिपोर्ट में प्रगति (PRAGATI) की सफलता को जिम्मेदारी और दक्षता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण बताया गया है। यह माना गया है कि प्रगति उभरती अर्थव्यवस्थाओं में प्रशासनिक जड़ता को दूर करने के लिए एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

प्रगति (PRAGATI) प्लेटफ़ॉर्म: एक परिचय-

उद्गम:

प्रगति (Pro-Active Governance and Timely Implementation) प्लेटफ़ॉर्म की शुरुआत 2015 में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत हुई थी।

कार्यान्वयन एजेंसी:

इसका संचालन प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) द्वारा किया जाता है।

उद्देश्य:

1. **परियोजनाओं के शीघ्र कार्यान्वयन:** तकनीक के माध्यम से वास्तविक समय में निगरानी सुनिश्चित करना। उदाहरण के लिए, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, रीयल-टाइम डेटा और ड्रोन फीड्स का उपयोग।
2. **सहयोगात्मक दृष्टिकोण:** विभिन्न सरकारी एजेंसियों को शामिल करके प्रशासनिक अलगाव को समाप्त करना।
3. **ई-पारदर्शिता और ई-जवाबदेही:** प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र के साथ पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना।

प्रगति प्लेटफ़ॉर्म: भारत के बुनियादी ढांचे में क्रांति:

1. **340 परियोजनाओं में तेजी:**
   - ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अध्ययन के अनुसार, प्रगति प्लेटफ़ॉर्म ने देशभर में 340 बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के कार्यान्वयन को तेज़ी से पूरा करने में मदद की।
2. **डिजिटल नेतृत्व का महत्व:**
   - प्रोफेसर सौमित्र दत्ता ने कहा कि प्रगति यह दर्शाता है कि शीर्ष नेतृत्व प्रौद्योगिकी का उपयोग करके समन्वय और जवाबदेही को बढ़ावा दे सकता है।
   - यह मॉडल उन देशों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है जो बुनियादी ढांचे को आर्थिक विकास का आधार बनाना चाहते हैं।

रिपोर्ट में मुख्य बिंदु:

1. आर्थिक प्रभाव:

- भूमि अधिग्रहण और अंतर-मंत्रालयीय समन्वय की समस्याओं को सुलझाते हुए, परियोजनाओं के शीघ्र कार्यान्वयन को सक्षम बनाता है, जिससे विलंब के कारण होने वाले लागत में कमी आती है।
- यह दिखाता है कि बुनियादी ढांचे में लक्षित निवेश और प्रभावी शासन कैसे मध्य-आय के जाल (Middle Income Trap) को दूर करने में सहायक हो सकते हैं।

2. सामाजिक प्रभाव:

- पिछड़े और दूरदराज के क्षेत्रों में परियोजनाओं को प्राथमिकता देकर क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में मदद करता है।

3. पर्यावरणीय प्रभाव:

- परियोजना योजना में स्थिरता को शामिल करना, तेजी से स्वीकृति प्रक्रियाएं, और हरित प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना परियोजनाओं के कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में सहायक है।
- उदाहरण: पर्यावरणीय मंजूरी के लिए प्रगति का *पारिवेश पोर्टल* के साथ समन्वय।

4. सकारात्मक शासन:

- प्रगति ने प्रशासनिक दक्षता को बढ़ावा दिया और सुशासन को सुनिश्चित किया है।
- उदाहरण: असम में बोगीबील रेल और सड़क पुल का सफल कार्यान्वयन, जो पहले कई विलंबों का शिकार था।

अमेरिका ने यूक्रेन को $725 मिलियन सहायता दी / US gives Ukraine $725 million in aid

अमेरिका ने यूक्रेन को $725 मिलियन के सहायता पैकेज की घोषणा की है, जिसमें बारूदी सुरंगें, वायु-रोधी और कवच-रोधी हथियार शामिल हैं।

मुख्य बिंदु :

1. **सहायता पैकेज की घोषणा:**
   - $725 मिलियन के इस पैकेज में बारूदी सुरंगें, वायु-रोधी और कवच-रोधी हथियार शामिल हैं।
2. **रूसी आक्रमण के खिलाफ समर्थन:**
   - बाइडन प्रशासन ने इस सहायता का उद्देश्य यूक्रेन की रक्षा को मजबूत करना बताया।
3. **तेजी से कार्यान्वयन:**
   - प्रशासन ने इसे शीघ्र लागू करने पर जोर दिया है, ताकि इसका प्रभाव तुरंत महसूस हो।
4. **भविष्य की नीतियों का संदर्भ:**
   - यह कदम राष्ट्रपति-चुनाव डोनाल्ड ट्रंप के तहत संभावित नीतिगत बदलाव से पहले उठाया गया है।
5. **सचिव ब्लिंकन का बयान:**
   - अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने इस पैकेज को यूक्रेन की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया।

रूस-यूक्रेन संघर्ष का पृष्ठभूमि:

1. **2013-2014 राजनीतिक तनाव:**
   - 2013 के अंत में, यूरोपीय संघ के साथ व्यापार और राजनीतिक समझौते को लेकर यूक्रेन और रूस के बीच तनाव बढ़ा।
   - राष्ट्रपति विक्टर Yanukovych द्वारा समझौते को निलंबित किए जाने के बाद कीव में प्रदर्शन हुए, जो हिंसा में बदल गए।
   - Yanukovych को हटाया गया, और रूस ने मार्च 2014 में क्रीमिया पर हमला कर उसे अपने में मिला लिया।
2. **क्रीमिया का अतिक्रमण:** रूस ने यह दावा किया कि वह क्रीमिया में अपने हितों और रूसी बोलने वाले नागरिकों की रक्षा कर रहा है।
3. **डोनेट्स्क और लुहांस्क विद्रोह (2014):** डोनेट्स्क और लुहांस्क क्षेत्र के प्रो-रूसी अलगाववादियों ने यूक्रेन से स्वतंत्रता की घोषणा की और डोनेट्स्क पीपल्स रिपब्लिक का गठन किया।
4. **मिन्स्क शांति समझौता (2015):** फ्रांस और जर्मनी द्वारा मध्यस्थता किए गए मिन्स्क शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, लेकिन यह संघर्ष को समाप्त करने में विफल रहा।
5. **2022 में रूस का आक्रमण:** फरवरी 2022 में, राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन पर युद्ध की घोषणा की, जिसे उन्होंने "यूक्रेन को सैन्य रूप से कमजोर करने" के रूप में बताया और इसे यूक्रेन से आने वाले खतरों के जवाब के रूप में पेश किया।

रूस के हस्तक्षेप के कारण:

1. **सुरक्षा चिंताएँ:**
   - सोवियत संघ के पतन के बाद, NATO का प्रभाव यूरोपीय क्षेत्र में बढ़ा। कई पूर्व सोवियत राज्य और कम्युनिस्ट देशों ने NATO में शामिल हो गए।
   - रूस को डर था कि अगर यूक्रेन भी NATO में शामिल होता है, तो उसकी पश्चिमी सीमा पूरी तरह से NATO से घिर जाएगी। NATO के विस्तार के साथ पश्चिमी सैन्य संसाधनों की तैनाती भी रूस के नजदीक हो गई।
2. **स्वतंत्रता का अधिकार:**
   - रूस ने दावा किया कि यूक्रेन में एक बड़ा हिस्सा स्वतंत्र राष्ट्र बनाने की इच्छा रखता है। इसी संदर्भ में, डोनेत्स्क और लुहान्स्क को स्वतंत्र राज्यों के रूप में मान्यता दी गई।
   - यह हस्तक्षेप इस औपचारिक घोषणा को वास्तविकता में बदलने की दिशा में एक कदम था।
3. **रणनीतिक विचार:**
   - रूस को यूरोपीय क्षेत्र में अपनी शक्ति और प्रतिष्ठा लगातार पश्चिमी देशों के सामने घटती हुई दिखाई दी।
   - इस हस्तक्षेप को रूस द्वारा अपनी शक्ति का प्रदर्शन और पश्चिमी देशों को संदेश भेजने के रूप में देखा जा रहा है।

एफडीआई प्रवाह में वृद्धि / Increase in FDI inflows

भारत ने अप्रैल से सितंबर 2024 के बीच FDI (विदेशी प्रत्यक्ष निवेश) प्रवाह में 45% की वृद्धि दर्ज की है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में $29.79 बिलियन तक पहुंच गया है। इस वृद्धि से भारत के निवेश, रोजगार सृजन और तकनीकी प्रगति में सुधार हुआ है।

मुख्य बिंदु:

- **एफडीआई प्रवाह में वृद्धि:**
  - अप्रैल-सितंबर 2024 के दौरान, FDI में 45% की वृद्धि हुई और यह $29.79 बिलियन तक पहुंच गया।
  - यह वृद्धि भारत के लिए विदेशी निवेश आकर्षित करने में सफलता का संकेत है।
- **प्रमुख लाभकारी क्षेत्र:**
  - FDI प्रवाह में सेवाएँ, IT, दूरसंचार, ऑटोमोटिव, फार्मास्यूटिकल्स और रसायन उद्योगों का प्रमुख योगदान है।
  - ये क्षेत्र देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।
- **Q2 FDI वृद्धि:**
  - जुलाई-सितंबर 2024 में FDI में 43% की वृद्धि हुई।
  - इस अवधि ने भारत के आर्थिक विकास को गति दी, जिससे निवेश, रोजगार सृजन और तकनीकी प्रगति में सुधार हुआ।
- **प्रमुख FDI स्रोत देश:**
  - प्रमुख FDI स्रोत देशों में मॉरीशस ($5.34 बिलियन), सिंगापुर ($7.53 बिलियन), अमेरिका ($2.57 बिलियन) और नीदरलैंड ($3.58 बिलियन) शामिल हैं।
  - हालांकि, जापान और यूके से प्रवाह में कमी आई है।
- **एफडीआई प्राप्त करने वाले शीर्ष राज्य:**
  - महाराष्ट्र $13.55 बिलियन FDI के साथ सबसे बड़ा राज्य है।
  - इसके बाद कर्नाटक ($3.54 बिलियन), तेलंगाना ($1.54 बिलियन) और गुजरात ($4 बिलियन) का स्थान है।
  - ये राज्य भारत के प्रमुख औद्योगिक और तकनीकी केंद्र के रूप में उभर कर सामने आए हैं।
- **पिछली अवधियों से तुलना:**
  - अप्रैल-जून 2024 के दौरान FDI में 47.8% की वृद्धि हुई, जो $16.17 बिलियन तक पहुंची।
  - पिछले वर्ष इसी तिमाही में FDI $10.94 बिलियन था, जो भारत में विदेशी निवेश की निरंतर वृद्धि को दर्शाता है।

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) क्या है?

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) वह निवेश है जिसमें एक देश के निवासी दूसरे देश में किसी कंपनी के स्वामित्व का अधिकार प्राप्त करते हैं, ताकि वे उत्पादन, वितरण और अन्य गतिविधियों का नियंत्रण कर सकें।

FDI के घटक:

- **इक्विटी पूंजी:** विदेशी निवेशक द्वारा किसी कंपनी के शेयरों का मूल्य।
- **पुनर्निवेशित आय:** विदेशी निवेशकों की वो आय जो लाभांश के रूप में वितरित नहीं होती और पुन: निवेश की जाती है।
- **इंट्रा-कंपनी ऋण:** निवेशक और उनकी सहायक कंपनियों के बीच उधारी लेन-देन।

FDI की श्रेणियाँ:

- **आड़ा FDI (Horizontal FDI):** निवेशक वही व्यवसाय विदेशी देश में शुरू करता है, जो उसने अपने गृह देश में चलाया।
- **ऊर्ध्वाधर FDI (Vertical FDI):** निवेशक एक संबंधित व्यवसाय स्थापित करता है, जैसे कच्चे माल की आपूर्ति करने वाली कंपनी में निवेश करना।
- **कांग्लोमेरेट FDI (Conglomerate FDI):** निवेशक ऐसे व्यवसाय में निवेश करता है, जो उसके मुख्य व्यवसाय से संबंधित नहीं होता।

FDI के तरीके:

- **ग्रीनफील्ड निवेश:** निवेशक विदेशी देश में अपनी नई फैक्ट्री या संगठन बनाता है और स्थानीय लोगों को प्रशिक्षित करता है।
- **ब्राउनफील्ड निवेश:** कंपनियां क्रॉस-बॉर्डर मर्जर्स और एक्विजिशन्स के जरिए अपने व्यापार का विस्तार करती हैं।

तटीय संकट / Coastal Crisis

हाल ही में संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान, केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने जानकारी दी कि भारत के लगभग एक-तिहाई तट कटाव के खतरे में हैं। यह समस्या तटीय प्रबंधन की प्रभावी रणनीतियों की जरूरत को उजागर करती है।

रिपोर्ट की मुख्य बातें: तटीय कटाव का आंकलन:

1. **देशव्यापी तटीय कटाव का आंकड़ा:**
   - पिछले तीन दशकों में भारत के 33.6% तटीय क्षेत्रों में कटाव हुआ।
   - 26.9% तटीय क्षेत्र में वृद्धि (संचय) दर्ज की गई, जबकि 39.6% क्षेत्र स्थिर रहा।
2. **कर्नाटक में क्षेत्रीय भिन्नताएँ:**
   - **दक्षिण कन्नड़:** कर्नाटक का सबसे प्रभावित जिला, जहां 36.66 किमी तटरेखा में से 48.4% (17.74 किमी) कटाव हुआ।
   - **उडुपी:** 100.71 किमी तटरेखा में से 34.7% (34.96 किमी) कटाव हुआ।
   - **उत्तर कन्नड़:** सबसे कम कटाव, 175.65 किमी तटरेखा में से केवल 12.3% (21.64 किमी)।
3. **डेटा और अध्ययन की विधि:**
   - यह अध्ययन नेशनल सेंटर फॉर कोस्टल रिसर्च (NCCR) द्वारा किया गया।
   - तटरेखा में बदलाव का आंकलन 1990 से 2018 तक सैटेलाइट इमेज और फील्ड सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया।
4. **जोखिम पहचान और मानचित्रण:**
   - इंडियन नेशनल सेंटर फॉर ओशन इंफॉर्मेशन एंड सर्विसेज (INCOIS) ने मल्टी-हैज़र्ड वल्नरेबिलिटी मैप्स (MHVM) तैयार किए।
   - इन मानचित्रों में समुद्र स्तर में वृद्धि, तटरेखा में बदलाव, और आपदाओं जैसे सुनामी और तूफानी लहरों के जोखिम वाले क्षेत्रों को दर्शाया गया है।

अन्य राज्यों में तटीय कटाव की स्थिति:

1. **पश्चिम बंगाल:**
   - राज्य के लगभग 60.5% तटीय क्षेत्र में कटाव हुआ है।
   - सुंदरबन क्षेत्र पर गंभीर प्रभाव पड़ा है।
2. **केरल:**
   - केरल के लगभग 46.4% तटीय क्षेत्र में कटाव दर्ज किया गया है।
   - यह स्थानीय समुदायों और पारिस्थितिक तंत्रों के लिए बड़ी समस्या बन रहा है।
3. **तमिलनाडु:**
   - राज्य के 42.7% तटीय क्षेत्र में कटाव हुआ है।
   - इससे तटीय बुनियादी ढांचे और लोगों की आजीविका को खतरा है।

तटीय कटाव के कारण:

1. प्राकृतिक कारण:

- **तरंग क्रिया (Wave Action):** उच्च ज्वार और तूफानों के दौरान समुद्र की लहरें तटीय इलाकों को काटती हैं।
- **समुद्र-स्तर में वृद्धि (Sea-Level Rise):** जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र का स्तर बढ़ने से तटीय बाढ़ और कटाव की घटनाएं बढ़ गई हैं।
- **तूफानी लहरें (Storm Surges):** चक्रवात और तूफानों से उत्पन्न लहरें निचले तटीय क्षेत्रों में गंभीर कटाव का कारण बनती हैं।

2. मानवजनित कारण:

- **तटीय विकास (Coastal Development):** बंदरगाह और समुद्री दीवारों जैसे निर्माण कार्य तटीय क्षेत्र में प्राकृतिक तलछट प्रवाह को बाधित करते हैं।
- **अवैध रेत खनन (Illegal Sand Mining):** समुद्र तट और नदियों से रेत निकालने से समुद्र तटीय क्षेत्रों में रेत की प्राकृतिक आपूर्ति बाधित होती है।
- **मैंग्रोव की कटाई (Deforestation of Mangroves):** मैंग्रोव वनों की कटाई से तटीय सुरक्षा कमजोर होती है, जिससे कटाव तेज होता है।

तटीय कटाव के प्रभाव:

1. भूमि और आजीविका पर प्रभाव:

- तटीय कटाव से कृषि योग्य भूमि और आवासीय क्षेत्र नष्ट हो जाते हैं।
- तटीय क्षेत्रों में रहने वाले समुदाय विस्थापित होते हैं, जिससे उनकी आजीविका प्रभावित होती है।

2. बुनियादी ढांचे को नुकसान:

- सड़कों, पुलों, और इमारतों को तटीय कटाव से क्षति पहुंचती है, जिससे आर्थिक नुकसान होता है।

3. पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव:

- मैंग्रोव, कोरल रीफ, और आर्द्रभूमि जैसे तटीय पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट हो जाते हैं।
- समुद्री जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

4. जल प्रदूषण और स्वास्थ्य समस्याएं:

- कटाव से समुद्र में मिट्टी और अन्य कण घुल जाते हैं, जिससे समुद्री जल प्रदूषित होता है।
- इसके कारण स्थानीय समुदायों में स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ती हैं।

आयुष मंत्रालय के दस वर्ष / Ten years of the Ministry of AYUSH

आयुष मंत्रालय (Ministry of Ayush) ने हाल ही में अपनी स्थापना के 10 वर्ष पूरे किए हैं। इस अवसर पर मंत्रालय ने आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी चिकित्सा पद्धतियों के विकास और प्रचार-प्रसार में अपनी उपलब्धियां और चुनौतियां साझा की हैं।

मुख्य बिंदु:

मंत्रालय की स्थापना और उद्देश्य:

- **स्थापना वर्ष**: 2014
- **उद्देश्य:** प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों का पुनर्जीवन और स्वास्थ्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार।
- **आयुष का अर्थ:** आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी।

इतिहास:

- 1995: इसे भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी विभाग के रूप में बनाया गया।
- 2003: आयुष विभाग नाम दिया गया।
- 2014: आयुष मंत्रालय की स्थापना।

आयुष मंत्रालय की उपलब्धियां:

1. **आयुष अवसंरचना का विस्तार:**
   - 3,844 आयुष अस्पताल।
   - दिल्ली, गोवा और गाज़ियाबाद में राष्ट्रीय आयुष संस्थान के 3 अत्याधुनिक सैटेलाइट केंद्र।
2. **तकनीकी एकीकरण:**
   - आयुष ग्रिड, ई-संजीवनी टेलीमेडिसिन जैसी डिजिटल पहल ने दूरस्थ क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा पहुंचाई।
3. **वैश्विक पहुंच:**
   - भारत और मलेशिया के बीच आयुर्वेद समझौता।
   - डोनर एग्रीमेंट और आयुष वीजा जैसी पहल।
   - जामनगर में WHO ग्लोबल ट्रेडिशनल मेडिसिन सेंटर की स्थापना।
   - 21 जून (ग्रीष्म संक्रांति) को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित।
4. **आर्थिक प्रभाव:**
   - 2014 में आयुष बाजार: $2.85 बिलियन।
   - 2023 में: $43.4 बिलियन।
   - आयुष उत्पादों का निर्यात 2014 से दोगुना ($1.09B → $2.16B)।

राष्ट्रीय आयुष मिशन (NAM) के तहत 2014-15 से 2023-24 तक मुख्य उपलब्धियां:

- 167 इकाइयों को संयुक्त आयुष अस्पताल स्थापित करने के लिए सहायता।
- 416 आयुष अस्पताल और 5036 आयुष औषधालयों का उन्नयन किया गया।
- 2322 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHCs), 715 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHCs), और 314 जिला अस्पतालों (DHs) को औषधियों और अन्य सहायक सुविधाओं के लिए समर्थन।
- 996 आयुष अस्पताल और 12405 आयुष औषधालयों को आवश्यक आयुष दवाओं की आपूर्ति की गई।
- 16 नई आयुष शिक्षण संस्थानों की स्थापना के लिए सहायता।
- 76 स्नातक (UG) और 36 स्नातकोत्तर (PG) आयुष शिक्षण संस्थानों में बुनियादी ढांचे, पुस्तकालय और अन्य सुविधाओं का उन्नयन।
- 1055 आयुष ग्रामों का सहयोग।
- 12,500 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों को मंजूरी दी गई।

आयुष मंत्रालय के समक्ष चुनौतियां:

1. वैज्ञानिक मान्यता का अभाव।
2. शिक्षा और चिकित्सकों की गुणवत्ता में कमी।
3. जागरूकता और आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकरण की कमी।

आयुष को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम:

1. **राष्ट्रीय आयुष मिशन (2014):**
   - केंद्र प्रायोजित योजना।
2. **आयुष क्षेत्र में 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)।**
3. **भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग की स्थापना:**
   - आयुष शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करना।
4. **आयुरज्ञान योजना:**
   - आयुष स्वास्थ्य क्षेत्र की क्षमता बढ़ाने के लिए।

रातापानी अभ्यारण्य: मध्यप्रदेश का 9वां टाइगर रिजर्व / Ratapani Sanctuary: 9th Tiger Reserve of Madhva Pradesh

मध्यप्रदेश में टाइगर रिजर्व की संख्या अब 9 हो गई है। हाल ही में, राज्य सरकार ने रातापानी अभ्यारण्य को 9वां टाइगर रिजर्व घोषित किया, जबकि शिवपुरी के माधव नेशनल पार्क को 8वां टाइगर रिजर्व का दर्जा मिला।

रातापानी टाइगर रिजर्व: मुख्य बिंदु:

1. **कुल क्षेत्रफल:**
   - कोर क्षेत्र: 763.812 वर्ग किलोमीटर।
   - बफर क्षेत्र: 507.653 वर्ग किलोमीटर।
   - कुल क्षेत्रफल: 1271.465 वर्ग किलोमीटर।
2. **भौगोलिक स्थिति:**
   - यह टाइगर रिजर्व रायसेन और सीहोर जिलों में स्थित है।
3. **बफर क्षेत्र में शामिल ग्राम:**
   - राजस्व ग्राम झिरी बहेड़ा, जावरा मलखार, देलावाड़ी, सुरई ढाबा, पांझिर, कैरी चौका, दांतखो, साजौली और जैतपुर।
   - इन 9 गांवों का 26.947 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र बफर क्षेत्र में जोड़ा गया है।

रातापानी टाइगर रिजर्व से होने वाले फायदे:

1. **ग्रामीणों के अधिकार सुरक्षित:**
   - टाइगर रिजर्व बनने से ग्रामीणों के मौजूदा अधिकारों में कोई बदलाव नहीं होगा।
2. **रोजगार के नए अवसर:**
   - ईको-टूरिज्म और पर्यटन के माध्यम से स्थानीय ग्रामीणों को रोजगार मिलेगा।
3. **अंतर्राष्ट्रीय पहचान:**
   - रातापानी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी।
   - भोपाल की पहचान 'टाइगर राजधानी' के रूप में होगी।
4. **बेहतर वन्यजीव प्रबंधन:**
   - टाइगर रिजर्व बनने पर राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) से बजट मिलेगा, जिससे वन्यजीवों का बेहतर प्रबंधन किया जा सकेगा।

मध्यप्रदेश में बाघों की स्थिति-

1. **बाघों की संख्या:**
   - वर्ष 2022 की गणना के अनुसार, मध्यप्रदेश में कुल 785 बाघ हैं।
   - वर्ष 2018 में बाघों की संख्या 526 थी।
2. **टाइगर स्टेट का दर्जा:**
   - मध्यप्रदेश को "टाइगर स्टेट" का दर्जा प्राप्त है।
3. **टाइगर रिजर्व की संख्या:**
   - पहले 7 टाइगर रिजर्व थे: कान्हा, बांधवगढ़, पेंच, पन्ना, सतपुड़ा, संजय दुबरी और नौरादेही।
   - रातापानी और माधव नेशनल पार्क को टाइगर रिजर्व घोषित किए जाने के बाद यह संख्या बढ़कर 9 हो गई है।
4. **बाघ संरक्षण का प्रभाव:**
   - बाघों की संख्या बढ़ने से वन्य जीवों के आशियाने भी तेजी से बढ़ रहे हैं।

भारत में बाघों की स्थिति (2024 तक):

वर्ष 2024 तक, भारत में 55 टाइगर रिजर्व स्थापित किए गए हैं। यह देश विश्व के लगभग 80% बाघों का घर है। भारत में बाघों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2006 में बाघों की संख्या 1,400 थी, जो अब बढ़कर 3,682 के करीब पहुंच गई है।

मध्य प्रदेश में सबसे अधिक बाघ हैं, जिसकी संख्या 785 है। इसके अलावा अन्य प्रमुख राज्य जो बाघों की महत्वपूर्ण आबादी रखते हैं, वे हैं:

- **उत्तराखंड**: 560 बाघ
- **कर्नाटका**: 563 बाघ
- **महाराष्ट्र**: 444 बाघ

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

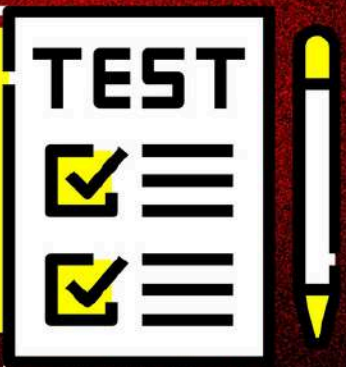

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala
7878158882
Apni.Pathshala
kaankit
AnkitAvasthiSir
Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !